डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव 2018 का तीसरा दिन
मीडिया एवं साहित्य पर परिसंवाद
आकाशवाणी एवं दूरदर्शन ने साहित्य की महत्त्वपूर्ण विरासत को सहेज कर रखा है– ए. सूर्यप्रकाश
सही दिशा का बोध होना जरूरी–बल्देव भाई शर्मा
सभी ने मीडिया की भाषा पर उठाए सवाल

नई दिल्ली। 14 फरवरी 2018। साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे साहित्योत्सव के तीसरे दिन आज मीडिया एवं साहित्य के संबंधों पर बातचीत करने के लिए एक विशेष परिसंवाद आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन प्रसार भारती के अध्यक्ष ए. सूर्यप्रकाश ने किया। उन्होंने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि वर्तमान में मीडिया बहुआयामी हुआ है और उसने बहुत सी प्राचीन परंपराओं को तोड़ा है। इसके बावजूद साहित्य ही नहीं कला और संस्कृति से जुड़ी बहुत सी जानकारियाँ अब भी इन माध्यमों में बहुत कम हैं। लगभग सभी समाचार पत्र–पत्रिकाओं एवं चैनलों पर लोकप्रिय संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन ने साहित्य और संस्कृति से जुड़ी देश की महत्त्वपूर्ण विरासत को बहुत सहेज कर रखा है और आने वाले समय में साहित्य अकादेमी जैसी अन्य संस्थाओं के सहयोग से यह विरासत देश के आम लोग को उपलब्ध कराने के प्रयास किए जाने चाहिए। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि पत्रकारिता को जल्दबाज़ी में लिखा हुआ साहित्य कहा जाता है जिससे मैं पूरी तरह सहमत हूँ। उन्होंने देश विदेश के बहुत से पत्रकार और लेखकों का ज़िक्र करते हुए कहा कि पहले इन दोनों के उद्देश्य एक थे लेकिन व्यावसायिकता के बढ़ते दवाब के कारण इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में साहित्य की जगह लगभग खत्म सी हो गई है। इसकी वजह से नई पीढ़ी अपनी भाषा और संस्कृति तथा साहित्य से लगभग विलग सी होती जा रही है। बच्चों और युवाओं में पढ़ने की प्रवृत्ति घटी है और उनकी मातृभाषाएँ भी प्रभावित हुई हैं, यह एक चिंतनीय विषय है।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि शब्द पर हमेशा संकट रहा है और रहेगा। आज टिकाऊ और बिकाऊ के बीच की लड़ाई है। लेकिन शब्दों ने अपनी लड़ाई हमेशा जीती है और यह संकट ही उसे और मज़बूत बनाएगा। उन्होंने पाठकों और श्रोताओं से अनुरोध किया कि वे विषय के अच्छे और बुरे पक्ष की पहचान करना सीखें।

उद्घाटन सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि मीडिया की बढ़ती दुनिया और साहित्य के रिश्तों की पड़ताल करने के उद्देश्य से हमने यह परिसंवाद आयोजित किया है। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में इस परिसंवाद के आयोजन के अन्य उद्देश्यों एवं विचार हेतु विभिन्न मुद्दों को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि 'न्यू मीडिया' की इस दुनिया में श्रेष्ठ साहित्य अपनी पहचान कैसे बनाए रखे, यह भी एक विचार का बिंदु है।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता सच्चिदानंद जोशी ने की और सुधीश पचौरी, राहुल देव, राजीव रंजन नाग ने हिंदी मीडिया और साहित्य पर चर्चा की। के. श्रीनिवास एवं आर.वी. रामाराव ने तेलुगु मीडिया में साहित्य की वर्तमान स्थिति के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

सुधीश पचौरी ने कहा कि मास मीडिया 'पापुलर कल्चर' पर चलता है और इधर आ रही नई फिल्में भी साहित्य और सामाजिक सरोकारों को प्रस्तुत करने का काम कर रही हैं। इन नए माध्यमों को हमें

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

संशयवादी बनकर नहीं देखना चाहिए बल्कि इससे समाज को हो रहे फायदों के बारे में भी सोचना चाहिए। राहुल देव ने वर्तमान मीडिया में भाषा की स्थिति को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे सबसे बड़ा नुकसान देश की मातृभाषाओं को हो रहा है। लेकिन उन्होंने आशा व्यक्त की कि नई पीढ़ी अनुभवों के नए खेत और खाद से जो फ़सल काटेगी वह भाषाओं के आत्मबोध को बढ़ाने वाली होगी। राजीव रंजन नाग ने समाचार चैनलों द्वारा जरूरी समाचारों की जगह टीआरपी बढ़ाने वाले सस्ते और घटिया समाचारों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें कहीं न कहीं मूलभूत समस्याओं के लिए लड़ रहे लोगों पर भी नज़र केंद्रित करनी होगी। तेलुगु के दोनों पत्रकारों के. श्रीनिवास एवं आर.वी. रामाराव ने भी तेलुगु भाषा के समाचार पत्रों से साहित्य के ग़ायब हो जाने की चर्चा विस्तार से की। सत्र के अध्यक्ष सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि हमें सोशल मीडिया द्वारा बन रहे नए साहित्य को भी अपने विमर्श में लाना होगा। बदलते दौर में ज़रूरी है कि हम फॉर्मेट आदि की ज्यादा चिंता न करते हुए इस नए साहित्य को भी अपनाना शुरू करें।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ मीडियाकर्मी राहुल श्रीवास्तव ने की और जनसत्ता के संपादक मुकेश भारद्वाज, दूरदर्शन के अमरनाथ अमर, निधीश त्यागी और शशि प्रभा ने अपने विचार प्रकट किए। इन सभी वक्ताओं ने मीडिया पर बाज़ारवाद और नई पीढ़ी के पास कम समय होने के कारण इन मीडिया माध्यमों में शब्दों के घटते प्रयोग पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आने वाले समय में हम एक बार पुनः शब्दों की सत्ता को समझेंगे और इन माध्यमों में साहित्य को लाने के लिए कोई न कोई रास्ता अवश्य निकलेगा।

कार्यक्रम के अंतिम सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष बल्देव भाई शर्मा ने की और शाहिद लतीफ़, देवप्रकाश, रवींद्र त्रिपाठी, अनंत विजय एवं बालेंदु शर्मा दाधीच ने अपने विचार व्यक्त किए। बल्देव भाई शर्मा ने कहा कि मीडिया को अपने बढ़ते स्वरूप के साथ–साथ सही दिशा का बोध भी होना ज़रूरी है। न्यू मीडिया बिना ज़िम्मेदारी के बहुत ज़्यादा समय तक चल नहीं पाएगा। बालेंदु शर्मा दाधीच ने कहा कि नई तकनीक ने जहाँ अभिव्यक्ति के नए दरवाज़े खोले हैं वहीं भाषा में बदलाव एक चिंताजनक स्थिति है। शाहिद लतीफ़ ने उर्दू मीडिया सहित अन्य भाषाओं के समाचार के अंतर संबंधों और उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों के बारे में अपनी बात की। उन्होंने कहा कि साहित्य और मीडिया दो अलग–अलग समानांतर रेखाओं की तरह हैं जो साथ चलती तो हैं लेकिन मिलती नहीं। अनंत विजय ने भाषिक शुद्धता के स्थान पर सहज सम्प्रेषण को वरीयता दी। लेकिन शब्दों के उचित प्रयोग का भी पक्ष लिया। रवींद्र त्रिपाठी ने मीडिया और साहित्य के रिश्तों को सूत्रात्मक तरीके से अपने वक्तव्य में प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में विभिन्न समाचार पत्रों, मीडिया चैनल्स के पत्रकार, लेखक एवं दिल्ली एवं आस–पास के क्षेत्रों से आए हुए सम्मानित साहित्यप्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

(के. श्रीनिवासराव)